INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF INDIA

डॉ. बी. आर अम्बेडकर : एक सामाजिक मनोवैज्ञानिक

सत्येन्द्र मणि विक्रम
पी-एच.डी., शोध छात्र
मनोविज्ञान विभाग, डी. ए. वी. पी. जी. कॉलेज, वाराणसी
Email: manivikram87@gmail.com
मो.- 83039996969

डॉ. भीम राव अम्बेडकर को एक महान अर्थशास्त्री, संविधान निर्माता और कानूनविद के रूप में रेखांकित किया जाता रहा। साथ ही साथ उनको दलित शोषित अन्य पिछड़े व महिलाओं जो सामाजिक रूप से असमानता का दंश झेल रही हैं को प्रखरता से उनकी आवाज को बुलंद किया एवं उनके हक़ अधिकार को संविधान में मुख्य रूप से उल्लेखित करने वाले सामाजिक सुधारक के रूप में भी उनको रेखांकित किया गया है। परन्तु डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक सुधारक के साथ-साथ एक सामाजिक मनोवैज्ञानिक भी थे और इनके इस पहलू पर बहुत कम ही ध्यान दिया गया। उन्होंने उस वंचित समाज के मनोबल को बढ़ने का सार्थक प्रयास किया, महिलाओं का उनका अधिकार प्राप्त करने के लिए जागरूक किया। वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए और तत्कालीन परिदृश्य को देखते हुए कहा जा सकता हैं कि डॉ. अम्बेडकर एक दूरदर्शी एवं सामाजिक मनोवैज्ञानिक थे। जो समाज के हर मांग और स्थिति को समझकर उनके मानसिक संरचना या उनके चिन्तन को पुनर्संरचित करने का काम किया।

मुख्य कुंजी : डिप्रेस्ड क्लास, सामाजिक संरचना

डॉ. भीम राव अम्बेडकर को एक महान अर्थशास्त्री, संविधान निर्माता और कानूनविद के रूप में रेखांकित किया जाता रहा। साथ ही साथ उनको दलित शोषित अन्य पिछड़े व महिलाओं जो सामाजिक रूप से असमानता का दंश झेल रहे हैं को प्रखरता से उनकी आवाज को बुलंद किया एवं उनके हक़ अधिकार को संविधान में मुख्य रूप से उल्लेखित करने वाले सामाजिक सुधारक के रूप में भी उनको रेखांकित किया गया है। परन्तु डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक सुधारक के साथ-साथ एक सामाजिक मनोवैज्ञानिक भी थे और इनके इस पहलू पर बहुत कम ही ध्यान दिया गया। उन्होंने अपनी पुस्तक Annihilation of caste में उन्होंने इन वर्ग को Depressed class कहा है। Depressed class अर्थात् ऐसे लोग जो हताशा से भर गए हो जीवन में विकट परिस्थितियों का सामना करते-करते विषाद से भर गएँ हो। डॉ. बी. आर. आंबेडकर ये बात अच्छी तरह से जानते थे कि जाति पूर्वाग्रह, भारतीय समाज में असमानता पैदा करने एक प्रमुख कारण है और यह व्यक्ति की एक मानसिक संरचना ही है। जो एक ही जैसे दिखने वाले व्यक्ति को अपने से बड़ा या छोटा समझता हैं। उन्होंने अपने शोध पत्र Caste in India : their mechanism, genesis and development में उल्लेख किया है कि जाति को सैद्धांतिक व व्यावहारिक दोनों रूप से समझाना अत्यंत जटिल हैं।

किसी भी व्यक्ति को शारीरिक दंड से ज्यादा अच्छा तरीका यह है कि उसके मानसिक सोच

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF INDIA

विचार/संरचना को पुनर्संरचित कर दिया जाए ताकि वह स्वेच्छा से स्वीकार कर सके। और इस बात को वो अच्छी तरीके से समझते थे। इसीलिए उन्होंने शोषित व वंचित समाज जोकि हजारों साल से सामाजिक वंचन झेलने के कारण उनमें हिन् ग्रथि मनोभावना जड़ कर चुकी थी। वो खत्म करने के लिए उस वंचित समाज के मनोबल को बढ़ने का सार्थक प्रयास किया। इस प्रक्रिया में उन्होंने सामाजिक संरचना के आधार पर जो सवर्ण जाति कही जाती थी। उनके प्रमुख सामाजिक सुधारक को साथ लेने का प्रयास किया। जिससे ये वर्ग अपने मन से छुआछूत के विकार को जड़ से निकालने के लिए प्रेरित हो। इससे समाज का ऊँचा तबका छोड़ा नीचे तथा समाज का नीचल तबका ऊपर उठने का प्रयास करने लगा जोकि सामाजिक समता का लक्ष्य स्थापित करने में सहायक बना। इतिहास काल से ही संस्कृतियों के संरक्षण का भार महिलाओं पर था। संस्कृतियों का आधार स्त्री जाति के पहनावा, रहन-सहन इत्यादि नियमों से संरक्षण की दुहाई देते आए इन्हीं वजहों से महिलाओं की स्वतंत्रता क्षीण होती गई। मात्रृसत्तात्मक सत्ता पितृसत्तात्मक सत्ता में परिवर्तिती हो गयी। महिलाओं के दिन प्रतिदिन जिंदगी कुरूतियों के जाल में फंसता गया और उनकी स्थिति दयनीय हो गयी सती प्रथा, बाल विवाह, देवदासी प्रथा, बहुविवाह प्रथा इत्यादि भारत की स्वतंत्रता के पूर्व विकराल रूप में विस्तृत हुए परन्तु भीम राव अम्बेडकर इनके अधिकार के लिए निरंतर संघर्ष करते रहें। उन्होंने 1920 में महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए अपना आन्दोलन शुरू किया और उसकी शुरुआत इस कथन के साथ किया-

"We shall see better days soon and our progress will be greatly accelerated if male Education is persuaded side by side with female Education" डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने पुरुषों की तरह महिलाओं को भी शिक्षा ग्रहण करने की समान अवसर की वकालत की। इस संदर्भ में उन्होंने महिलाओं को भी उनके अधिकार के प्रति जागरूक होने के लिए निरंतर अभिप्रेरित किया। इसी का परिणाम यह था कि 25000 महिलाओं की उपस्थिति में 'आल इंडिया दलित महिला कांफ्रेंस' में 20th जुलाई 1942 को अम्बेडकर ने अपने संबोधन से उनको प्रभावित किया। जिसके पश्चात महिलाओं ने बौद्ध दर्शन, नाटक और आत्मकथा लिखना प्रारम्भ कर दिया। ये उनकी नेतृत्व गुण को प्रदर्शित करता हैं। भारत की आज़ादी के उन्होंने महिलाओं के लिए संविधान में उनके उनके राजनीतिक एवं सामाजिक अधिकार को उल्लेखित किया हैं :

उदाहरण स्वरुप :

अनुच्छेद- 14, समान अधिकार और अवसर राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक रुप से

अनुच्छेद- 15, लिंग आधारित असमानता का निषेध

अनुच्छेद- 39, समान वेतन एवं समान कार्य जो की उनके हिन् भावना को दूर करने के लिए

अनुच्छेद- 42, मानवीय परिस्थिति कार्य करने के लिए और मातृत्व छुट्टी

अनुच्छेद- 46, सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों की विशेष देखभाल और शोषण से सुरक्षा

अनुच्छेद- 47, राज्यों की जिम्मेदारिया, पोषण और स्वस्थ्य को बेहतर करने के लिए

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF INDIA

अनुच्छेद- 243 (D), 243T (3) और 243R (4) पंचायती राज-व्यवस्था में महिलाओं के लिए सीट सुरक्षित रखने के लिए।

भारतीय समाज में पुत्र प्राप्ति की इच्छा एवं अन्य सामाजिक कुरीतियों के कारण बहुविवाह का प्रचलन बहुत ही अधिक था। इस समस्या को दूर करने के लिए डॉ. भीम राव अम्बेडकर जी ने संविधान सभा में 'हिन्दू कोड बिल' पेश किया। जिसमें एक से अधिक विवाह को गैकानूनी घोषित किया गया। यह उनकी एक वर्ग की मनः स्थिति को समझने की दूरदर्शिता थी। जिसका आज हम परिणाम में देखते हैं कि आज बहुविवाह भारतीय समाज में न के बराबर हैं। एक समाज मनोवैज्ञानिक हमेशा समाज की मूल अवधारणाओं को लेकर चलता हैं जिसमें वह हमेशा इस बात का ध्यान रखता हैं कि समाज में सभी व्यक्ति की मानसिक स्थिति अच्छी हो, एक वर्ग का दूसरे वर्ग का व्यवहार कैसा हैं ? और इस बात की परख डॉ. भीम राव अम्बेडकर की थी।

किसी भी आधार पर भेदभाव करने की प्रक्रिया हमेशा से समाज में समरसता का भाव स्थापित करने की कोशिश को कमजोर करती जाति हैं। इसी आधार पर सन् 1948 में भाषाई आधार पर राज्य बनाये जाने की प्रक्रिया जिसके तहत Linguistic province commission की आलोचना की। उनके अनुसार भारत की एकता में भाषा, जाति की मानसिक सोच विघ्न डालती हैं। एक अलग भाषा के आधार पर राज्य का गठन आज भारत की वर्तमान समस्याओं में से एक हैं उदाहरण स्वरुप : पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग, आन्ध्र प्रदेश की समस्या। बाबा साहेब ने अपने Thoughts of Linguistic States अपने अंतिम कथन इस प्रकार लिखे हैं कि भाषाई आधार पर राज्य का गठन एक नई राजनीतिक समस्या खड़ी कर दी जोकि हिंदी भाषी उत्तर भारत और दक्षिण भारत के बीच संघर्ष का कारण बनेगी और नए-नए भाषा के आधार पर राज्यों की मांग उठेगी। भारतीय समाज में अनेक जाति, धर्म के लोगों का निवास हैं उस समय तो जातीय और धार्मिक भेदभाव चरम पर थी परन्तु एक ऐसा सूत्र था जो सबको बांधे रखती हैं और वो हैं भारतीयता और वो इस बात पर जोर देते थे कि लोग एक साथ समता का भाव लेकर खड़े हो और राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दे और वो इस बात को बखूबी समझते थे। इसीलिए उन्होंने समाज को शिक्षित होने पर ज्यादा जोर दिया। उन्होंने 4 अप्रैल 1938 को Bombay Legislature में अपने अभिभाषण में कहा कि "I want all people to be Indian First, Indian last nothing else but Indians"

यह दर्शाता हैं कि उनके लिए राष्ट्रीयता धर्म और जाति से कहीं ज्यादा महत्व रखता हैं। बाबा साहेब इस बात को भली भांति जानते थे कि Depressed class मनोबल इतना नीचे हो चुका है कि उनको मुख्य धारा में लाना बहुत ही मुश्किल काम हैं और इस बात का सबसे प्रमुख कारण लोगों में ये बात धार्मिक आधार पर मान्यता के रूप में बस चुका है जिसको दूर करना बहुत ही जटिल काम है। उन्होंने इस समस्या के मूल बातों पर ध्यान दिया। जैसे की हिन्दू समाज में एक सामाजिक क्रम था जिसका आधार मनुस्मृति था जैसा उसमें वर्णित है:

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF INDIA

I.93“ As the Brahmana Sprang from Prajapati’s (i.e. God’s) mouth, as he we first , born , and as he possesses the Veda, he is by right the Lord of this Whole creation”.

I.94. “For the self existent (swaymbhu) i..e. God having performed ousterities, produced him first from his own mouth, in order that offerings might be conveyed to the Gods and mans and that this universe might be preserved.”

“The very birth of a Brahmana is an eternal incarnation of the scared law (Veda) for he is born to (fulfill) the sacred law, and becomes one with Brahmana (God).”

डॉ. अम्बेडकर ने समाज में व्याप्त वर्ण-व्यवस्था का घोर विरोध किया था क्योंकि यह समाज में व्यक्ति को एक समान दर्ज़ा नहीं देता हैं। समाज के Depressed class को उनका सामाजिक अधिकार दिलाने के लिए राजनीतिक भागीदारी को महत्वपूर्ण मानते थे क्योंकि वो अगर सत्ता में होंगे तो अपने अधिकार को प्राप्त कर सकते हैं। इसी वजह से उन्होंने गोलमेज सम्मेलन में उनके अधिकार को दिलाने की बात पुरजोर तरीके से रखा। जिसके परिणाम स्वरूप गाँधी जी और डॉ. अम्बेडकर जी के बीच बहस के उपरान्त आरक्षण (प्रतिनिधित्व) का जन्म हुआ अर्थात् डिप्रेस्ड क्लास के लिए सभी जगहों पर कुछ प्रतिशत सीट आरक्षित होगा। परन्तु डॉ. अम्बेडकर सामाजिक भेदभाव को मिटाने के लिए इसे उपयुक्त नहीं मानते थे। वे अंतरजातीय विवाह और जाति-व्यवस्था को समाप्त करने के पक्षधर थे। उनको इस बात की बहुत ही चिंता थी की कहीं ये आरक्षण (प्रतिनिधित्व) आगे भारत में संघर्ष को जन्म न दे दें। इसीलिए उन्होंने इसे 10 वर्ष तक रखने को कहा परन्तु उस वक़्त की तत्कालीन परिस्थिति को देखते हुए सरकार ने इसे आगे कुछ वर्षो तक बरकार रखने को कहा आज भारत में जातिगत आरक्षण की मांग एक चुनौती बनती जा रही हैं। अतः डॉ. अम्बेडकर ने उस वक़्त ही इस परिस्थिति को भांप लिया था ये उनकी भारतीय समाज के प्रति समझ ही थी। परन्तु आरक्षण (प्रतिनिधित्व) से इन वर्गों को फायदा भी हुआ इस बात से इनकार भी नहीं किया जा सकता हैं। डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने अपने जीवन के अंतिम समय में बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया और उस समय लाखों लोगों ने बौद्ध धर्म अपनाया इस प्रकार ये बात स्पष्ट हैं कि उनमे करिश्माई नेतृत्व का गुण था।

अतः वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए और तत्कालीन परिदृश्य को देखते हुए कहा जा सकता हैं कि डॉ. अम्बेडकर एक दूरदर्शी एवं सामाजिक मनोवैज्ञानिक थे। जो समाज के हर मांग और स्थिति को समझकर उनके मानसिक संरचना या उनके चिन्तन को पुनर्संरचित करने का काम किया।

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF INDIA

संदर्भ सूची:

Vasant ,M., (1979).The Hindu Social order: Its Unique Features. Dr. Baba Saheb *Ambedkar writing and speeches., Govt. of Maharashtra, Bombay department of education.1.*

Vasant, M.,(1982). Dr. Baba Saheb Ambedkar Writings and Speeches , Govt. of Maharashtra, Bombay department of education, *2*, 195 .

Vasant, M.,(1987). Dr. Baba Saheb Ambedkar :Writings and Speeches , Govt. of Maharashtra, Bombay department of education. *3*.

Ambedkar, B.,R.(1936). Annihilation Of Castes. Columbia University,. Retrieved 23 march 2014.

Ambedkar, B.R.(1916). Caste in India: Their Mechanisms, Genesis and Development. Indian Antiquery, 41.

Vasant,M.(1991).Dr. Baba Saheb Ambedkar Writings and Speeches, Govt. of Maharashtra, Bombay department of education.16.

More, V.(2011).Dr. Baba Saheb Ambedkar's contribution for women's rights. *Various Multidisciplinary Research , 2*(1),1-8

Ubale,M.(2016). Dr. Baba Saheb Ambedkar's Approach to Women Empowerment. *International Education and Research,2* (6).1-3.

What is Dr. Ambedkar's contribution towards women's right in India [Quara- pdf-6/01/2017]